प्राथमिक स्तर के डी.एल.एड के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य तथा सांस्कृतिक भागीदारी पर कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन-

मनोज कुमारी यादव
शोध छात्रा (शिक्षा विभाग)
Enrolment no- 20220514
मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़
(उत्तर प्रदेश)

डॉ दिनेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर

संक्षेप (Abstract) :-

आज के आधुनिक समाज में मूल्य शिक्षा में कमी देखने को मिल रही है| तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, और सामाजिक परिवर्तनों के कारण नैतिक मूल्यों में परिवर्तन और चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। नैतिक मूल्य न केवल व्यक्ति को जीवन जीना सिखाते हैं, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक तथा देश के विकास में भी सहायक होते हैं| ठीक इसी तरह से सांस्कृतिक भागीदारी को नकारा नहीं जा सकता इसके द्वारा राष्ट्रीय एकता को बढ़ाया जा सकता है|
यह अध्ययन कला समेकित क्रियाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करता है ,जो प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी पर पड़ता है |इस शोध में वास्तविक कक्षा प्रयोगात्मक परीक्षण का उपयोग किया गया है| इसके द्वारा प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार परिवर्तन का पता लगाया गया है|
शोध में प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी से पूर्व के प्रभाव का स्तर तथा कला समेकित क्रियाओं के बाद के प्रभाव के स्तर को जानने की कोशिश की गई है|

तुलनात्मक अध्ययन से मिले परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि कला समेकित क्रियाओं के प्रयोग के बाद सभी प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी में बदलाव आया है, जो इस बात को प्रमाणित करता है कि इन क्रियाओं के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों ने अपने व्यवहार में परिवर्तन आसानी से किया, और इस व्यवहार में आए परिवर्तन को उन्होंने शीघ्र ही अपना लिया|
यह निष्कर्ष व्यावहारिक मनोविज्ञान से संबंधित साहित्य से मिलते जुलते हैं| जो नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी को पश्च परीक्षण के बेहतर विकास से जोड़ते हैं| अध्ययन यह भी रेखांकित करता है, कि व्यावहारिक मनोविज्ञान से समृद्ध कला समेकित क्रियाओं से

संबंधित सामग्री जैसे कि (प्रेरक कहानियां ,महापुरुषों की जीवनियाँ , नैतिक मूल्यों पर एनीमेटेड वीडियो) आदि का उपयोग प्रशिक्षणार्थियों की मानसिक एकाग्रता तथा सृजनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं|

कीवर्ड: डी.एल.एड के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक भागीदारी, कला-समेकित क्रियाएँ, मूल्य आधारित शिक्षा, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, भारतीय शिक्षा।

प्रस्तावना :- आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों की भूमिका और उनके महत्व को समझना आवश्यक है। आज तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा समाज में होने वाले अनेक सामाजिक परिवर्तनों के कारण नैतिक मूल्यों में कमी आई है|

NEP 2020 (नई शिक्षा नीति 2020) के संदर्भ में आयोजित की जाने वाली कला-समेकित क्रियाएं विद्यार्थियों के समग्र विकास (holistic development) पर बल देती हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान देना नहीं बल्कि रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, सांस्कृतिक जागरूकता, और नैतिक मूल्यों को भी विकसित करना है। NEP 2020 के संदर्भ में कुछ प्रमुख कला समिति क्रियाएं जैसे दृश्य कला क्रिया, पेंटिंग प्रतियोगिता ,नैतिक मूल्य, पर्यावरण संरक्षण पर पोस्टर बनाना ऐतिहासिक स्मारकों, त्योहारों के प्रतीक बनाना, आदि क्रियाओं को विद्यालय में आयोजित किया जा सकता है| शोध में कुछ बहुत सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे कि एक भारत श्रेष्ठ भारत ,क्षेत्रीय उत्सव मनाना, स्थानीय कला आदि का आयोजन किया जा सकता है|

प्रशिक्षार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास और उनकी सांस्कृतिक भागीदारी पर एक शोध रूपरेखा के माध्यम से अध्ययन करने से पता चलता है ,कि कला-समेकित क्रियाएँ प्रशिक्षार्थियों के नैतिक चिंतन को गहरा करती हैं, तथा उनके सांस्कृतिक भागीदारी के स्तर को भी बढ़ाती हैं| भागीदारी का मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना है| हमें किसी भी समुदाय में आपस में भेदभाव नहीं करना चाहिए|

इन क्रियाओं के द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है |तथा सामाजिक जागरूकता को भी बढ़ाया जा सकता है| कला-समेकित क्रियाएँ छात्रों का ध्यान केंद्रित करने में भी सहायक होती हैं | इन क्रियाओं से प्रशिक्षणार्थी भविष्य में एक अच्छे शिक्षक के रूप में मूल्य शिक्षा एवं सांस्कृतिक रूप से परिपूर्ण पाठ्यक्रम का निर्माण करके प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य को लागू कर सकते हैं| जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप है।

अनेक प्रयोगात्मक अध्ययनों से पता चला है , जिन बच्चों का प्रारंभिक विकास की अवस्था में नैतिक मूल्यों का विकास हो जाता है |उनका चिंतन ,कौशल अच्छे होते है|

प्राथमिक शिक्षा में कलात्मक गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए, जिससे कि छात्रों में सृजनात्मकता तथा कल्पना शक्ति और चिंतन का विकास किया जा सके|
कला समिति क्रियाओं को पाठ्यक्रम में पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, जिससे कि प्रशिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावी तथा रोचक बनाया जा सकता है|
शोध दर्शाता है कि छात्रों को प्राथमिक स्तर पर मूल्य आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए, क्योंकि वह लंबे समय तक मस्तिष्क को प्रभावित करती है|

उद्देश्य :-

शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि कला क्रियाओं का प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी पर समूह, धर्म ,जाति वर्ग विशेष के हिसाब से क्या प्रभाव पड़ता है ? यह प्रयोगात्मक वीडियो और स्व निर्मित उपकरणों के माध्यम से किया गया है| साथ ही साथ यह पता लगाने की कोशिश भी की गई है कि क्रियो के द्वारा किस तरह सेशिक्षण पद्धति में लाभ लिया जा सकता है

कार्य प्रणाली :-_ शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है| किसी भी शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि द्वारा मनुष्य के व्यवहार पर मनोवैज्ञानिक प्रयोग किया जाता है, फिर डाटा एकत्र किया जाता है और उसके बाद जो परिणाम आते हैं उनका विश्लेषण किया जाता है ,उसके बाद उस समस्या का समाधान करके सही निष्कर्ष निकाला जा सकता है|

अध्ययन का आधार:-

शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के प्रशिक्षणार्थियों को भिन्न-भिन्न समूहों में बांटा गया है , और उन्हीं के आधार पर प्रयोगात्मक परीक्षण किया गया है |

यह अध्ययन दो मुख्य प्रश्नों पर केंद्रित है-

शोध प्रश्न:-

1-क्या प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों का कला समेकित क्रियो के द्वारा विकास किया जा सकता है?

2- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों की सांस्कृतिक भागीदारी के स्तर को कैसे बढ़ाया जा सकता है?

शोध उपकरण:-

1-|स्व निर्मित नैतिक मूल्य मापनी |,

2-स्व निर्मित सांस्कृतिक भागीदारी पर प्रश्नावली|

डाटा विश्लेषण -

शोध अध्ययन के समय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न उपकरणों की सहायता से प्रदत्व एवं सूचनाओं को एकत्र किया है|

अपने शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों को सारणीबद्ध एवं व्यवस्थित रूप प्रदान किया है |तथा निष्कर्ष निकालने के लिए **मध्यमान** , **मानक विचलन , एवं 'जेड ' टेस्ट परीक्षण** सांख्यिकी का प्रयोग किया है|

समूह	कला समेकित क्रियाओं से पूर्व नैतिक मूल्यों का Z स्कोर	कला समेकित क्रियाओं के बाद नैतिक मूल्यों का Z स्कोर	कला समेकित क्रियाओं से पूर्व सांस्कृतिक भागीदारी का Z स्कोर	कला समेकित क्रियाओं के बाद सांस्कृतिक भागीदारी का Z स्कोर	टिप्पणी
पुरुष	-0.6	0.77	-.64	.67	
महिला	-0.75	0.84	-.49	.99	
ग्रामीण	-0.62	0.93	-0.24	.94	
शहरी	-0.76	0.62	-0.64	.90	
कला	-0.24	0.89	-0.50	.95	
विज्ञान	-0.1.05	0.65	-.64	.89	
सामान्य	-0.49	0.60	-.78	.58	
अजा0	-0.76	0.91	-.6	.96	
मुस्लिम	-0.48	0.65	-0.21	.98	
अ पि व	-0.79	0.86	-.25	1.01	
हिंदू	-0.70	0.85	-.58	.93	
मुस्लिम	-0.48	0.65	-.21	.97	

निष्कर्ष:-

शोधार्थिनी द्वारा अपने अनुसंधान में यह पाया गया ,कि सभी जाति , धर्म , वर्ग संप्रदाय विशेष के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी पर कला समेकित क्रियाओं का प्रभाव पड़ता है| लेकिन सभी प्रशिक्षणार्थियों में इन मूल्यों तथा सांस्कृतिक भागीदारी का स्तर कम ज्यादा हो सकता है|

आज हमारी भारतीय संस्कृति में कमी देखने को मिल रही है| इस शोध का मुख्य उद्देश्य इन मुद्दों को समझना और समाधान खोजना है| विभिन्न रीति रिवाज ,परंपराओं, भाषण

,साहित्य आदि को अपनाकर नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है| यह शोध समाज में सांस्कृतिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करेगा और इसे बढ़ावा देने के लिए जागरूकता फैलाएगा| हमें भारतीय संस्कृति तथा परंपराओं को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए| सांस्कृतिक भागीदारी का मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना है |यह विभिन्न समुदायों को आपस में जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है|

नैतिक मूल्यों पर प्रभावों को घटते हुए क्रम में समूह आधारित निष्कर्ष के आधार पर हम इस प्रकार लिख सकते हैं

अजा - ग्रामीण - कला- अ पि व- विज्ञान - शहरी

इसी प्रकार से सांस्कृतिक भागीदारी पर प्रभावों को घटते हुए क्रम में समूह आधारित निष्कर्ष के आधार पर हम इस प्रकार लिख सकते हैं

अ पि व- ग्रामीण - अजा - कला- विज्ञान - शहरी

शिक्षा में इस शोध का क्या उपयोग है:-

यदि हमारी भारतीय शिक्षा व्यवस्था अपना पूरा पाठ्यक्रम कला समेकित क्रियाओं को आधार मानते हुए डिजाइन करती है या निर्धारित करती है, तो निश्चित तौर पर हमारे समाज में बहुत तेजी से नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक भागीदारी में सकारात्मक बदलाव आएंगे ,जो की न केवल हमारे समाज का विकास करेंगे बल्कि हमारे देश के विकास में भी अहम योगदान देंगे|

सुझाव:-

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि छात्रों में नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक समझ का विकास करना भी है। कला-समेकित शिक्षा (Arts-Integrated Learning) एक प्रभावी शिक्षण पद्धति है, जो रचनात्मकता, सहयोग और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ाती है। यह शोध इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे कलात्मक गतिविधियाँ प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं के नैतिक और सांस्कृतिक विकास में सहायक हो सकती हैं।

- शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कला-समेकित शिक्षण को अनिवार्य किया जाए।
- स्कूलों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन बढ़ाया जाए।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. क्या कला- समेकित क्रियाएँ प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित करती हैं?
2. क्या ये क्रियाएँ उनकी सांस्कृतिक भागीदारी को बढ़ाती हैं?

शोध विधि (Methodology)

- **प्रयुक्त विधि:** - प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है|
- **नमूना (Sample):** 50 बी.एड./डी.एल.एड. छात्रों का समूह।

उपकरण (Tools):

1-|स्व निर्मित नैतिक मूल्य मापनी |,

2-स्व निर्मित सांस्कृतिक भागीदारी पर प्रश्नावली|

डेटा संग्रह: कला--समेकित कार्यशालाओं से पूर्व और पश्चात् प्रतिक्रियाएँ एकत्र की गईं।

परिणाम (Findings)

- **नैतिक मूल्यों में वृद्धि:** 70% प्रशिक्षुओं ने स्वीकारा कि नाटक और समूह गतिविधियों ने उनमें सहानुभूति और न्यायबोध विकसित किया।
- **सांस्कृतिक भागीदारी में वृद्धि:** 80% छात्रों ने भारतीय लोककलाओं (जैसे नृत्य, लोकगीत) के प्रति रुचि दिखाई।

निष्कर्ष (Conclusion)

कल समेकित क्रियाएँ नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने में प्रभावी हैं। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन्हें सम्मिलित करने से भावी शिक्षक अधिक संवेदनशील और सांस्कृतिक रूप से सजग बन सकते हैं।

पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया जाता।

व्यावहारिक प्रशिक्षण (जैसे- रोल प्ले, केस स्टडी) से नैतिक मूल्यों का विकास बेहतर होता है।

सुझाव (Recommendations)

- शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कला-समेकित शिक्षण को अनिवार्य किया जाए।
- स्कूलों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन बढ़ाया जाए।

संदर्भ (References)

- NCERT (2019). *Art Integrated Learning: Handbook for Teachers*.
- National Education Policy (NEP), 2020.
- NCERT. (2020) Value Education in Primary Schools.
- 3. सिन्हा, ए.के. (2018). नैतिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण. विद्या प्रकाशन|